11. स्वच्छ दुग्ध उत्पादन :

- दूध दुहने से पूर्व अथवा दूध दुहते समय गाय को उत्तेजित नहीं होने दो। गाय को दोहन के समय सुख का अनुभव होना चाहिये और दोहन के उपरान्त उसे विश्रांति (Relaxation) मिलनी चाहिये।
- दूध दुहना प्रारम्भ करने के लगभग एक मिनट पूर्व गाय को पंसुरा लेना चाहिये। गाय को पंसुराने के लिये सर्वाधिक कारगर उद्दीपन (Stimuli) गाय के थनों को साफ करने के लिये थनों को किसी गर्म कपड़े से मालिश करना है। गाय जब तक पांसुर न जाय, तब तक उसे दुहना प्रारम्भ न करना चाहिये।
- हाथ से दूध दुहते समय सूखे हाथों का प्रयोग करना चाहिये और चारों उँगलियों और हथेली के बीच थन को दबाकर दूध दुहना चाहिये। मशीन द्वारा गोदोहन से पूर्व इस बात की भी भली प्रकार परीक्षा कर लेनी चाहिये कि वह ठीक काम करती है अथवा नहीं और उसे भली प्रकार साफ कर लेना चाहिए।
- दूध दुहने में मशीन का प्रयोग किया जाये, तो जैसे ही थनों से दूध निकलना बन्द हो दूध दुहने की मशीन को थनों से हटाकर अलग कर देना चाहिये।

यदि गाय का दूध सुखाना हो तो धीरे-धीरे करके दूध दुहना बन्द करना चाहिये। यदि ब्यांत भर में गाय 305 दिन तक दूध दे चुकी है और वह 3-4 माह के भीतर ही ब्याने वाली है तो उसे सुखा डालना चाहिये भले ही गाय काफी दूध क्यों न दे रही हो। 305 दिन पूर्व गाय को तभी सुखाना चाहिये जबकि वह निकट भविष्य में ही ब्याने वाली हो अथवा इतना कम दूध देती हो कि उसे दुहना आर्थिक दृष्टि से लाभदायक न हो। लेकिन यदि गाभिन न हुई हो तो दूध देती हुई गाय का दूध नहीं सुखाना चाहिये।

कभी कभी गाय के थनों से उन्हें दुहने से पूर्व दूध टपकने लगता है। यह दो बातों के कारण हो सकता है -

- गाय के थनों के मुख की पेशियाँ कमजोर हों।
- गाय की थन कुण्डिका (Teat cistern) में घाव हो।

थनों के घाव को प्रदाहन करके (Cauturizing) अथवा शल्य क्रिया द्वारा ठीक किया जा सकता है। यह शल्य क्रिया उस समय की जानी चाहिये जबकि गाय सुखा ली जाये। यदि थन चटक जायें तो उन पर वैसलीन लगा देनी चाहिये।

11.1 दुहते समय कुछ अनुकरणीय बातें (Some Do's For Milking) :

- दूध दुह जाने के समय का नियमितता से पालन करिये।
- दूध दुहने से पूर्व दुधारू पशु के पिछले अंगों को भली प्रकार धोकर साफ कर लेना चाहिये।
- केवल ऐसे ग्वालों से ही दूध दुहवाइये जो कि साफ कपड़े पहिने हों, जिन्होंने अपने हाथ-पैर भली प्रकार साफ कर लिये हों और जो किसी संक्रामक रोग (Infectious Disease) से पीड़ित न हों।
- दूध दुहने के बर्तनों को भली प्रकार साफ कर लेना चाहिये। ये बर्तन यथासम्भव औंधे मुंह के हों।
- गो-दोहन में उस ढंग का प्रयोग करिये जिसमें पूरी मुट्ठी का प्रयोग किया जाता है (Fisting)।
- गो-दोहन का काम शीघ्रता से, नरमी और पूर्ण रूप से किया जाना चाहिये। ऐसा करने पर गाय से लगभग 20 प्रतिशत अधिक दूध उपलब्ध किया जा सकता है।

- दुहने का काम अधिक से अधिक सात मिनट में समाप्त हो जाना चाहिये। हम पहले बता चुके हैं कि दुधारू पशुओं में दूध का स्राव ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन के प्रभाव पर निर्भर करता है। यह हार्मोन पीयूष ग्रन्थि द्वारा अयन के उद्दीपन होने पर उत्पन्न होता है और सात मिनट तक इसका प्रभाव बना रहता है।

11.2 दूध दुहते समय कुछ अकरणीय बातें (Some Dont's for Milking) :

- दूध दुहते समय न तो गाय को डराइए न उसे उत्तेजित ही करिए।
- दूध दुहते समय ग्वालाओं को अपने हाथ से दूध अथवा पानी मत चुपड़ने दीजिये और सूखे हाथों ही गो-दोहन कराइये।
- गो-दोहन के समय हथेली तथा स्तन के बीच अंगूठा मत लगाने दीजिये।
- दूध दुहने के लिये खुले मुँह की बाल्टी का प्रयोग मत करिये।
- जहां तक सम्भव हो, दूध दुहने के लिये ग्वालाओं को बार-बार मत बदलिये।
- प्रत्येक थन से दूध की पहली कुछ घार किसी अलग बर्तन में निकाल लीजिये और इस प्रकार निकले दूध को मत मिलने दीजिये।
- दूध दुहते समय पशुओं को ऐसा चारा मत खाने को दीजिये जिससे तीव्र गन्ध आती हो अन्यथा दूध इस गन्ध को शोषित कर लेगा।
- दूध को खुले मुंह के बर्तन में कदापि न रखें।
- स्वच्छ दुग्ध उत्पादन हेतु दुहने का स्थान साफ सुथरा होना चाहिए एवं दुहने से पहले पशु के पिछाड़ी व थन गुनगुने पानी से धों ले व कपड़े से पोछ लें।
- दूध दुहने का बर्तन प्रत्येक दिन गरम पानी से जरूर धोना चाहिए।
- बीमार पशु का दूध अलग रखना चाहिये।
- दूध में रासायनिक पदार्थ नहीं डालना चाहिये।